

❀ श्रीगणेशायनमः ❀

॥ अयोध्यामाहात्म्य प्रारम्भः ॥

॥ सोरठा ॥

एकदंत भुजचारिसिद्धिसदन गौरासुवन ।
वन्दौं बारंबार बुद्धिहीन तनुजानि कै ॥

रघुबरचरित कछूमै गाऊं। गणपतिकी आज्ञाजो पाऊं॥
सुमिरों सरस्वतिमातुभवानी। जोहैंविद्याकेगुणखानी॥
देवीदेवसुमिरोंसब भाई। तैंतिसकोटि जहांलगिगाई॥
सुमिरोंदेवव्यासऋषिराई। श्रीभागवतकथाजिनगाई

॥ सोरठा ॥

बन्दौं श्रीगुरुदेव ज्ञान ध्यान मनलाय कै ।
करौं तुम्हारी सेव दास हजारी जानिये ॥ २ ॥

एकसमय श्रीशंकरस्वामी। कथाकहतनिजहर्षितगामी

ताहिसमय श्रीगौरामाई । हाथजोरि बोलीं सिरनाई ॥
कहहु अयोध्याको सब भेवा । कैसेरचीगई यहदेवा ॥
बोलेशंभु तबहि हरखाई । सुनौ उमातुम मनाचितलाई
अवधपुरी देवनकेहेता । रचीकृपानिधि विष्णुनिकेता
सरजूनदी तहां जो भाई । बड़ो महातम ताकोगाई ॥
मंजनकरै तहां जोजाई । बिष्णुलोकपावै समुदाई ॥

॥ दोहा ॥

उमा सुनौ मनलायकै रघुबर चरित अपार ।
पढ़ैसुनै सुखपाइये जगमें सब नर नारि ॥

अवधपुरीके पश्चिममाहीं । घाघरनदीअहैतेहिठाहीं ॥
सोविरंचिकर पुत्रकहावै । तेहिनहाइ पांचों फलपावै॥
हिलिमिलिबहैं सरयूकेमाहीं । निर्मलनीरबहैतेहिठाहीं
बोलीउमा फेरि सिरनाई । सुनौ प्रिया तुम पुरीसुनाई
बोले शंभु तबैहरषाई । सुनौ प्रिया तुम मनचितलाई
एकसमय सुन ब्रह्माकेरा । पिता भक्तिमें चित्तघनेरा ॥
सोपितुपासएकदिनगयेऊ़दोउकरजोरिपितासेकहेऊ
एक लालसाहै मनमाहीं । पूरी होय पितातुमपाहीं ॥

॥ दोहा ॥

सुनि प्रसन्न बोलेवचन सुनो पुत्र मनलाय ।
जौन लालसाहोय मन हमसों कहौ बुझाय ॥

बोलेपुत्रतवहिसिरनाई । सुनो पितातुममनचितलाई
अमरपुरीसमपुरीवसाऊं । जोपितु तेरीआज्ञापाऊं ॥
बोले चतुरानन हरषाई । सुनोपुत्रतुममनचितलाई॥
पहिले विष्णुपासमैंजाऊं । आज्ञाउनकीमैंलैआऊं ॥
इतनीकहिकेब्रह्मागयेऊ।देखिविष्णुहर्षितमनभयेऊ॥
केहिकारणचतुराननआये।यहिकोभेदकहोसमुझाये ॥
बोले ब्रह्माज्ञान उपाई । सुनोतात मैं कहौंबुझाई ॥
मृमनश्यामभूपसुतमेरा । हैतुवभक्ति में अधिकघनेरा

यकदिन मोसन आयकै ऐसे कही सुनाय ।
अमरपुरी सम पुरीयक रचौं पिता मैं जाय ॥

तेहिकारण तवपासमैंआवा।बारवारतवसीसनवावा॥
बोलेअजरअमर सुखदाई।नीकबचनतुममोहिंसुनाई
मृत्युलोककोअबतुमजावो।ऐसेबचनतुममोहिंसुनावो

॥ दोहा ॥

अमर पुरी सम तुमपुरीरचौ पुत्र सुख पाइ ।
आज्ञा दई है विष्नु ने सो मैं कही सुनाइ ॥
अवध नाम ताको धरो होय अवध पुरनाम।
तामें मम अवतार हो रामचन्द्र गुण ग्राम ॥

इतनी सुनिकै ब्रह्मा आये । देखिपुत्रनेतवसिर नाये॥
कहीपिता ममबात जनाई।कही विष्नुनेकाहिसमुझाई

तव ब्रह्माने वचन सुनावा। आज्ञाबिष्नुकीमैंलैआवा॥

॥ दोहा ॥

रचों पुरी मन लायकै सुनौ पुत्र धरि ध्यान ।
नाम अयोध्या राखियो होवै तवकलयान ॥

भ्रमन भूप हर्ष युत भयेऊ। पुरीरचनकीमनमेंठयेऊ॥
बिश्वकर्म्माकोतुरतबुलावा।पुरीरचनकोबचनसुनावा॥
अमर पुरीसम पुरीबनावो। घर बैठे सेवकाई पावो॥
बिश्वकर्म्मानेयहसुनपाई।चलेसकलमिलिकैतवधाई॥
रचनपुरीको ऐसे लागे। देखतजासु सकलदुखभागे॥
कहुं तडाग कहुंकूपबनाये। कहुं२मंदिरबिबिधिवनाये॥
कहुं२सुंन्दर वृक्ष लगाये। सुंन्दरकोयल शब्दसुहाये॥
कुहुं२ मोर पपीहा बोलैं। हंसचकोर कहुँकरतकलोलैं।
ऐसेविश्वकर्म्मा वनवावा। भूपनभूपदेखिमन भावा॥

॥ दोहा ॥

सकलसृष्टिके वै सबैभूपन भूप बुलाय॥
होमकियाफिर वेदविधि सबदुखसो मिटिजाय॥
सबैदेवता नेवतकै भोजन विविधि वनाय।
सन्माने नृपनेसबैकोकवि कहै सुनाय॥
सबदेवन ने हर्षयुत अवध पुरी धरिनाम।
दई अशीश फिरिभूपको रहै तुम्हारो नाम॥

याविधिअवधपुरीहमगावा।जहँलगभेदसांचहमपावा
इतिश्रीअयोध्यामाहात्मेंउमा।शिवसम्वादेभाषा
हजारीकृतेवर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

बोलीउमाफेरिसिर नाई। ऐसहिकहोऔर कछुगाई ॥
सरयू नदीपासजो गाई। ताकोभेदकहौ समुझाई ॥
बोलेशम्भुतबहिंहरखाई।सुनौप्रियातुममनचितलाई ॥
एकदिवसनृपदशरथराऊ। गयेस्नानकरनसतभाऊ ॥
चारोंकुंवर साथनृपलीन्हे। सरयूमहंस्नानहि कीन्हे ॥

॥ दोहा ॥

विप्रनको तबबोलिकै दिये नृपति ने दान।
कौनतीर्थ यह विप्रहै मोसन कहहु वषान ॥
विप्रनकहो सुनायकै सुनौनृपति मन लाय।
नामतीर्थ जानतनहीं केहिविधि कहौंसुनाय ॥

जलसेतबैप्रगटभईनारी। तबदशरथने तुर्तनिहारी ॥
कोतुमदेवीहौजलमाहीं। मोसनभेद कहौयहिठाई ॥
तबसरयूबोली हरषाई। सरयूनदी ममनामकहाई ॥
आई रामचन्द्रके कारन। जोपृथ्वी के भारउतारन ॥
सरयूकथाशम्भुयहगाई।जोगिरिजासनकहीबुझाई ॥

इतिश्री अयोध्यामाहात्में उमाशिवसम्वादे भाषा
हजारी कृते वर्णनोनाम द्वितीयो ऽध्यायः ॥ २ ॥

औरो कथा सुनौजगपावा । स्वर्गद्वारदेवनमनआवा ॥
तहं स्नान करै जोजाई । कोटि जन्मके पापनसाई ॥
प्रथम गुप्तहर जानिये दुतिय चक्र हरआन ।
तीसर विष्णु हरिधर्म है चतुर्थ विल्वहरजान ॥
पंचम पांचों धर्महैं अष्टम वेद पुराण ।
सप्तम रविहरि विष्णुहैं अरचे श्रीभगवान् ॥
अस्थापे हैं सामने रामचन्द्र ने भाय ।
दर्शन इनके जोकरै स्वर्गलोक को जाय ॥
इति श्रीअयोध्यामहात्मे उमा महेश्वर सम्वादे
भाषाहजारीकृतेवर्णोनामतृतीयोऽध्यायः ३ ॥
जवहरिआपहिस्वर्गसिधाये।सवपरिवारहिसंगलगाये
भयेअयोध्यामहंअंधियारा।सूझिनपरतचद्रनभतारा
तवहिंअयोध्यावहुविलषाई।रामचन्द्रसोंविनतीलाई॥
तवप्रभुनेयहवचनसुनाये।सुनोअयोध्यामनचितलाये
लेहौंफिर अवतारअनूपा। हुइहौंपुत्रअवधसुरभूपा॥
आइनगरकोफेरिवसाऊं। तुम्हरीमनसामेंमनलाऊं ॥
॥ दोहा ॥
रामलियो अवतार फिरि अवधपुरी महं आय ।
लवकुश प्रभु दोपुत्रभये सुनौ उमा मनलाय ॥
राम कुमारभयोकुशनामा । वानेश्चोतीर्थअभिरामा ॥
नागेश्वरशिव थापेउभाई । नागनकोभयसकलमिटाई

॥ दोहा ॥

स्वर्गद्वारके पासहैं नागेश्वर भगवान।
दर्शन तिनके जो करैं पावैं पद निरवान ॥

करतअयोध्या जेनरबासा। अंतकालजावैंहरिपासा॥
सोनर यमसे नाहिंडराई। देखतयमताकोभगिजाई ॥
मासअसाढ़सकलमन्भावन। पूरणमासीचंद्रसोहावन
अर्चनहोत तहांहै भाई। यहिविधि सकलपुगननगाई
ताके दक्षिणतीरथभाई। दतुवनकुंड नामहमगाई ॥

॥ अथ जन्मस्थानकी कथा ॥

जन्मभूमिके दर्शनपावै। वहनरनहिंचौरासि जावै ॥
तहांपवनसुत श्रीहनुमाना। दर्शनकरैहोयसुखनाना॥
भौमबारहै उनकीपूजा। सकलमिटावतदुःखअबूझा॥

इति श्रीअयोध्या माहात्मे उमाशिव सम्बादे
भाषा हजारीकृते नाम चतुर्थोऽध्याः ॥

॥ कनकभवन महातम ॥

कनकभवनहैतहांसुहावन। दर्शनरामजानकीपावन॥
जन्मभूमिफिरिजावे भाई। दर्शनकरै तहां मनलाई ॥

चैत्रसुदी नौमी प्रभू रामचन्द्र अवतार।
तादिनतहँऽस्नानकरि कीजै अतिसुखसार ॥

दशमीदिनभरतअवतारा। एकादशीलक्ष्मणपगुधारा

ताहीतिथि औताहीवारा। रिपुसूदनलीन्होअवतारा
इति श्रीअयोध्यामाहात्मेउमाशिवसम्वादेभाषा
हजारीकृतेनाम पंचमोऽध्यायः ५ ॥
औरयेकइतिहासवषानों। सुनौचित्तदेभर्म न मानो॥
यककोढ़ीयकतेलीभाई। तीसरयक बटमार कहाई॥
चौथकुमारगयकबदकामी। पंचवांपांचवाननरगामी॥
कियेनरकुकेकामनिकेता। केहिविधिजैहैंविष्णुभनेता॥
इन पांचोने आयकै कियो तहांऽस्नान।
अंतगये वैकुंठको बाजे तबल निशान॥
इतिश्रीअयोध्यामाहात्मेउमाशिवसंवादेभाषा
हजारीकृतेषष्टमोऽध्यायः॥ ६॥
सियारसोई तहां है भाई। ताकोमहत कहैं हमगाई॥
तेहिदर्शनते अतिसुखहोई। पापनाशताकोहोइजाई॥
नाम सुमित्रा यक स्थाना। जहं औतार शेषकोजाना॥
सीताकूप तहां यक भाई। तहंऽस्नान करै मनलाई॥
॥ दोहा ॥
तहां विभीषण कुंडहै सुग्रीवकुंड के पास।
सुवर्ण कुंडतेहि पासहै दर्शन ते अघनास॥
इतिश्री अयोध्या माहात्मे उमाशिवसम्वादे नाम
भाषाहजारीकृतेसप्तमोऽध्यायः॥७॥

अग्निकुण्डयक तीरथ है दर्शनकरै जो जाइ॥
सर्व पापताके कटैं अंत स्वर्ग पद पाइ॥
सरयूजल तहंसंगमकीन्हा। तहंस्नानकरै परवीना॥
सीताकुंड तहां है भाई। तारनतरनजगतके आई॥
अशोकवृक्षतहां अनुकूला। कलपवृक्षतटवाकीमूला॥
तेहिके फूलअसूनहैंभाई। अद्भुतलिखतपुराननगाई।
इतिश्रीअयोध्यामाहात्मेउमाशिवसम्वादे हजारीकृते
वर्णनोनाम अष्टमोऽध्यायः॥ ८॥
योगकुंडतहांएकगावा। अतिपुनीतजोगीमनभावा॥
तेहिकेनिकटवृहस्पतिकुंड़ा। जोसुतगुरुहैंसुरननिकंदा
तेहिऽस्नानते यहफलहोई। मूर्खपना जावैसबखोई॥
एकसमैश्रीयदुपतिराई। रुक्मिनिसहितअवधपुरजाई
अवधपुरीकोबहुतसराया।रुक्मिनिकुंडतहांबनवाया॥
कातिकसुदीनौमीकोभाई। अधिकमहातमतहांकोगाई
॥ दोहा ॥
रुक्मिनि कुण्ड के उत्तर क्षीर कुण्ड है भाय।
नृप दशरथ के थापकर ऐसी कही सुनाय॥
छतरनाथकेदर्शनकरई। आश्विनमाससुखदसोलहई
धनजकुंज पै जावै कोई। संतनधन पावै अधिकाई॥
हरीचन्द्र राजा यकनाऊं। ताकी कथा कौन मुखगाऊं॥

कुंडवसिष्ठ केर स्नाना। अविरल भक्ततांहिकोजाना॥

इतिश्रीअयोध्या माहात्मे उमाशिव सम्वादे भाषा
हजारीकृते वर्णनो नाम अष्टमो ऽध्यायः॥

सागरब्रह्म कुण्डयकठौरा। ताको महत कहौं कछुऔरा
तेहिमाजोकोईकरैस्नाना। ताकोबहुविधिकहतपुराना॥
अश्विनपूर्णमासीजोपावै। तादिनजोनरजायनहावै॥
तापरयकइतिहासबखानौ। सुनौचित्तदैभर्म न मानौ॥
एकसमयकाली द्विजरूपा। धाराआवानगरअनूपा॥
आयरामनेकीन्हप्रणामा। ताछिमनरामकुंडतहंनाम॥
तिर्वेनी वैतरनी कुण्डा। काटतअन्तसमययमफन्दा॥
तामेजोकोई जायनहावै। अन्तकाल बैकुंठ सिधावै॥
विधमाकुंड तहांहै भाई। कायामिलतकोढ़िनकोभाई॥
फिरिशिविकुंडनहावैजाई। विष्णुलोकपावै समुदाई॥
सूर्यदेव मनै हरखाई। तिमिरि नाश ताको होजाई॥

॥ दोहा ॥

भादों सुदीतिथि अष्टमी होत तहां स्नान।
दर्शनते सुख पाइये जो नर है गुनवान॥

इतिश्रीअयोध्या माहात्मे उमामहेश्वर सम्वादेभाषा
हजारीकृते वर्णनोनाम नवमोऽध्यायः ९॥

॥ दोहा ॥

जन्मकुण्ड एक तीरथ है ताके तीरहिं माय।

तेहि स्नान जो करै रामलोक को जाय ॥
ईश्वरकुण्डतहां यक भाई। सिद्धिकामना सबहोइजाई॥
जोटादेवी तहां हैं भाई। बड़ामहातम तेहिका गाई ॥
तहँहै देवीकालिकामाई। तिनके दरश करै मनलाई ॥
बन्दी देवी तिनके पासा। दर्शनकरे बन्दिहो नासा ॥
तिमिरिकुंडयकतहांसुहावा। तिमिरिनाशताकोहमगावा।

॥ दोहा ॥

कार्तिक बदी अमावस्या तहां होत स्नान।
तादिन जौन नहाइहैं ह्वै हैं वह गुणवान ॥
निर्मल कुण्ड यक तीरथहै ताके तीरहिभाय।
तहां नहावै जौननर वह निर्मल होइजाय ॥
उत्तरसूर्य कुंड के ओरा। दुर्गाकुंड नाम वहि ठौरा ॥
अष्टभुजा दुर्गातहां माई। बन्दनकरेदुःखमिटिजाई ॥

॥ दोहा ॥

कार्तिक सुदी एकादशी तहां पर मेला होय।
दुर्गाके दर्शन मिलत जाय अघौगुण खोय ॥
इतिश्री अयोध्यामाहात्मे उमाशिव सम्बादे भाषा
हजारी कृते नामदशमो ऽध्यायः ॥
पूर्व ताके बिलहर घाटा। बालमीकदर्शन सुखदाता॥
शृंगीऋषिकोतहँस्नाना। दर्शनकरेहोय सुखनाना ॥

॥ दोहा ॥

कार्तिक शुदी पूर्णिमा को होत तहां स्नान।
चैत रामनौमी विषे पूजैं श्याम सुजान॥

नन्दग्राम है ताके पासा। भरतकुंडसबपुजवैआसा॥
गयासमानताहिफलजानो॥पितरनपिंडतहांतुममानो॥
मानोगया पितरकरिआये। पितरनभूरिसबैफलपाये॥

॥ दोहा ॥

नन्दग्राम और भरतसकुण्ड कहेउँ यक पास।
और कुंड ताके निकट सोहत हैं सुखसार॥

तहिके पश्चिम कालीमाई। तेहिस्थानमहाछबिछाई॥
पश्चिमजटाकुण्डकेओरा॥अजितनामस्थानहैओरा॥

॥ दोहा ॥

सूदन कुण्ड तीरथ तहां रिपु सूदन के नाम।
दशरथ के लघु पुत्रने रचो अनूपम धाम॥
पिशाच कुण्ड ताके निकट करत तहां स्नान।
पिशाच कुण्ड ताके निकट कहते वेद पुरान॥
ज्ञानकुण्ड ताके निकट जल पीवत सबकोय।
भरत कुण्ड तेहि पासहै दर्श करत सुखहोय॥

इतिश्री अयोध्यामाहात्मे उमाशिवसम्वादे भाषा हजारीकृते नामएकादशोऽध्यायः॥ ११॥

भैरोंनाथ तहां हमगाई । पूजनकरैजोमनाचितलाई ॥
होय प्रसन्न भैरोंभगवाना । देयबरदानहोयकल्याना ॥
सीताकुण्डनिकटतेहिपास॥रचीजानकीअतिसुखरासा।

॥ दोहा ॥

जेष्ठ शुक्ल चौदसि बिषे लोग करें स्नान ॥
जाय बसे हरिधाम मे जहां बसत भगवान ।
जमकुंड ताके निकट तहां नहावै जाय ।
अंतकाल जमराजसे ताकीभय मिटिजाय ॥

तापरयेक इतिहासबषानौ । सुनौचित्तदैभर्म नमानौ ।
नामसुशर्मा येक द्विजराऊ । ताकामै इतिहाससुनाऊ॥
एकसमय तहं निकसेजाई । जमउकुंडमें जाइनहाई॥
करिस्नान भवनको जाई । अंतकाल दुजको नियराई॥
यमराजा ने दूतपठाये । मुद्गर लेकर तुरत सिधाये ॥
दावघावसबकरनसोलागे॥द्विजकेप्राननिकारनलागे॥
उततेंविष्नुने दूतपठाये । लैविमान द्विजके घरआये ॥
यमनेकहा कहंआयेभाई । नहिंशुभकर्म कियेदुजराई ॥
इहिकोहम अबहीं लैजैहैं । घोरनर्कमे याहि गिरै हैं ॥
बोलेदूत तबहिंरिस आई । कैसेयम तुम बोलतभाई ॥
हमसे बिष्नुने कहासुनाई । याकोहमयमपुर लैजाई ॥
आज्ञाबिष्नुपायहमआये । तुमसेसत्य वचनसमुझाये

यम बोले यहहोनकीनाईं । याको हम यमपुर लैजाईं ॥
होनलगी तबतुरतलड़ाईं । बहुसंग्राम भयो तहंभाईं ॥
विष्नुकेदूतनजमनअगायो।तवतौयमराजाचलिआयो
आयविष्नुसे कहासुनाईं । यमफांसी तुमराखौजाईं ॥
काहेकू तुमनें नर्क बनाईं । जो पापी बैकुंठहि जाईं ॥
कबहू राम नाम नहिंलीना । नाकछुभूखेको इहिदीना ॥
ताकोतुमबिमान पठवावा । अपनेनिकट ताहिबैठावा ॥
तबतौ विष्णुनेकहासुनाईं।सुनुयमराजचित्तमनलाईं ॥
यमतीरथमेजौनन्हावै । तुमरेलोकन फिरिवहआवै ॥
इतिश्री अयोध्या माहात्मे उमाशिव संवादे भाषा
हाज़ारीकृते नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

॥ अथमहात्म्य अगस्तकुंड ॥

मुनि अगस्त दक्षिणस्थाना । जोतिलकरैरामकरध्याना
तिनके दर्शनयहफलहोई । विद्यावानगुणी नरसोई ॥
यकसैसखिको वोनर तारे । पितरनापिंडतहां नरपारे ॥

॥ अथमहातमपारासर ॥

परासरमुनिभयेयेकनाऊं । अतिपुनीततिनकाहैठाऊं ॥
देतमनोरथ जोमनमाना । ऐसेयाको लिखतपुराना ॥

॥ अथकोकिलातीर्थमहातम ॥

तीरथकोकिलकाजलानिर्मल।ताहिनहायेहोतहैउज्जल

॥ अथश्रीकुंडमहातम ॥

श्रीकुंड है तीरथ एका । तहांनहाये मनुज विसेका ॥
ताकोमहत कहैको गाई । शेषसारदा कहत सकाई ॥

॥ दोहा ॥

कुंवरि छुदीतिथि अष्ठमी होय तहां स्नान ।
कोढ़िनको कायामिलै निर्धनहो धनवान ॥

इतिश्री अयोध्यामाहात्मेउमाशिवसम्वादे भाषाहजारी कृते नाम त्रिदशो ऽध्यायः ॥ १३ ॥

॥ अथ माहातम शंतरीदेवी ॥

ताके निकट शंतरीदेवी । पूजनकरै विविधिनरसेवी ॥
मनोकामना जोमनलावै । मनबांछितसोनरफलपावै ॥
चैत्रअष्टमी जोहरिमासा । वादिनदेवीकरै प्रकाशा ॥
तादिनदेवी यह जोजावै । मनोकामना सोघर आवै ॥

॥ दोहा ॥

धन्यमातहै शंतरीजो पुरवैमन सबकाम ।
त्रेतायुगके बीचमे थापीनिजकर राम ॥

॥ अथ महातमसंवरनदी ॥

संवर नदीवहै तेहि पासा । मंजनकरेहोत अघनाशा ॥
तेहिऽस्नानकरै जो जाई । पापनाश ताको होइजाई ॥

कतिकीका होवे ऽस्नाना । यात्राकियेहोय सुखनाना ॥
इतिश्री अयोध्या माहात्मे उमाशिवसंवादे भाषा
हजारीकृतेनाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

अथ महातमटेढीनदी कुवजासंगम

॥ दोहा ॥

कुबिजा संगम महतको सुनौ उमाधरिध्यान ।
अतिविचित्र तेहिकीकथा भाषा श्री भगवान ॥
तापरयेकइतिहासवखानौ।सुनौचित्तधरिभर्मनमानौ ॥
पंपापूरनगर इक नामा । तहांवसैकोविदद्विजग्रामा ॥
कोविदरहौललितसुषवानी।ब्रह्मउमासकताहिवषानी॥
विद्यारथिनकोनित्तपढावै।औशुभकर्मसवनासिषलावै॥
एककन्या ताके घर माहीं । बिद्यामे वाके सम नाहीं ॥
बरसंयोगभई जवप्यारी । तवव्याहनको करीतयारी ॥
विद्यारथीकेवलइकनाथा । वेदविदितपूर्णभयोकाथा ॥
गुरुकीसेवा करैअधिकाई । गुरुपुन्यते विद्या पाई ॥
पुत्रसमान गुरुतेहिराषा । जोकुछ वेदबिदितहैभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पंडित लगनविचारि के कियो सुकन्या दान ।
रीति भांतिसबकुल करी बहुत किया सन्मान ।
दायजदीन विप्रबहु भांती । शोभावरनकहीनाजाती ॥

एकसमयतेहिकथासुनाऊं। कर्मप्रधानताहिफलपाऊं॥
आधीरात समय के अंता। केवलवेद पढै वहसंता॥
तेहिसनगुरुने कहासुनाई। आधीरात पढतकोभाई॥
केवलगुरुकाकहानमाना। तवतोवहुतगुरूरिसयाना॥
दीनश्राप गुरुनेरिसआई। अपनेसिरपै श्रापचढाई॥

॥ दोहा ॥

कठिनश्राप गुरुने दियो केवल भयो बेहाल।
विद्याको भूले सबै लगा श्राप ततकाल॥

जोगुरुआज्ञाकोनहिंमाना। सहेकष्टअपनेसिरनाना॥
केवलगुरुसेआयसुमांगी। जोगकरनकीमंसालागी॥
गुरुवोलेहम जानतनाहीं। अपनेपितासेमांगोजाही॥
तवतोकेवल गयेपितुपाहीं। ऐसेवचनकहे वहिठाहीं॥
तबतोपितावहुतदुखपाई। आयसुदीन अधिककठिनाई
चलत २ गयेयमुनातीरा। केवलध्यानकीन्ह रघुबीरा॥
भजनभावकेवलपरतापा। दीनमिटाय गुरूकाश्रापा॥
इतिश्री अयोध्या माहात्मे उमाशिवसंबादे भाषा
हजारीकृतेनाम पंचदसोऽध्यायः॥ १५॥

॥ महातम षोडामनवरस्नान ॥

दो० ॥ चैतपुर्ण मासी विषे तहां करे स्नान।
काशीसमयाके फलहिं गावत बेदपुरान॥
दशरथ नृपने आयकै होमयहांपर कीन।
याहीसेसुतचारि भये रामअधिक परवीन॥

॥ अथ रेखानदी माहात्म ॥

रेखानदी सुना यकनामा । रेखाखींचराम अभिरामा ॥
वनोबासजबराम सिधाये । लछिमनसीतासंगलगाये ॥
मृग मारनकोरघुवरगयेऊ । रेखाखींचकहत असभयेऊ
बाहेररेखकेतुममति जाना । नाहींदुःखसहोविधिनाना ॥

॥ दोहा ॥

रावन पुत्रमरीच यक धरिआयो मृगरूप ।
मारि रामताको दियो अवध राज सुत भूप ॥

नदीवही तहनै पर आई । तेहिसे रेखानदी कहाई ॥
तहांरामने करिअसनाना । रेखानदी कहातेहिजाना ॥

इति श्रीअयोध्या माहात्मे उमाशिवसम्बादे
भाषा हजारीकृते नाम षोड़सो ऽध्यायः ॥ १६ ॥

॥ अथ महातमरामतीर्थ ॥

तीरथरामसन्तमनभावन । कलिमलकेसबदुःखनशावन
चैत्रशुक्लदोनोंतिथि आवै । तादिनमनुजतहांपरजावै ॥
इंद्रआदि और मुनिराई । सबके नाम कहै को गाई ॥
दक्षगंधर्वब सुरन समेता । करैस्नान आइ मन चेता ॥
पूंछतभयेराम सबभेवा । कैसा महत लिखोसुरदेवा ॥
गुरुबसिष्टतवगायसुनावा । रामचरितसबकेमनभावा

दो०॥ सुरनर मुनिजेतेरहे सकलभयेइकठौर ।
सुनिप्रसंग बोले वचन जैजै रामकिशोर ॥

जितनेसुरनरवहांपैआये । चढिविमानबैकुंठसिधाये ॥

पूरनभईकथासनुताता। अतिपवित्रसवहीसुखदाता॥
रामतीर्थप्रभुसवबनावा।ताहिनहाय्अधिकफलपवा॥
इति श्री अयोध्या माहात्मे उमाशिवसंबादे भाषा
हज़ारीकृते वर्णोनोनाम सप्तदशमो ऽध्यायः॥ १७॥

॥ अथमहातमत्रगाम ॥

तीनग्रामहैं मुक्तिके दाता।तिनकेनाम सुनौजगत्राता॥
सालिग्रामपथिकहैंगावा। दूसरनामविमलगुनगावा॥
तीसर अवदायकहै ग्रामा। तीनोंके असकहहैंनामा॥
दो०॥ जोतीनों यहग्रामहैं फलदायक हैं चार।
बहुतपसिनयहां तपकियो पायोहै सुषसार ॥

॥ अथसप्तपुरीमहातम ॥

सूर्यपुरी अधिकौ सुखकरै। प्रथमअयोध्यामे जोपरै॥
दूसरमित्र पुरी है नाऊ। तीसर हरिग्राम प्रभाऊ॥
चौथेकाशी पुरी कहावै। पंचमकांची सुःखदिखावै॥
षष्टमउज्जैन पुरीकाजानौ। सप्तमद्वारिकापुरीवखानौ॥

॥ दोहा ॥

सप्तपुरी के महतको कहैकौन गुण गाय।
पदवी जीवन मुक्तिकी पावै नर समुदाय॥
इति श्री अयोध्यामाहात्मे उमाशिव सम्वादे भाषा
हजारीकृते नाम अष्टमदशोऽध्यायः॥ १८॥

॥ अथमहातमनौवन ॥

दो०॥ दंडकवन प्रथमेकहौं दूसर सिद्धिवनजान।

तीसर जम्बुकवन कहा करै मारग हैरान ।
चौथ पुष्कर वन कहों सुनौं सकल दै कान ॥
पांचवा घोरवन अधिकहै षष्टम जुगलिहि जान ।
सप्तम सुभ वावन कहो जातेहो चितशुद्ध ॥
अष्टम आलवन वन कहो तपकरते नरवृद्ध ।
नवां येक वन तहांहै हिमवन ताको नाम ॥
ऐसे ही नो वन कहै गावत बेद पुरान ।
इतिश्री अजोध्या महातमे उमाशिवसंवादे भाषाहजारीकृते नाम उन्नीसवां ऽध्यायः ॥ १९ ॥

॥ जाप महातम अष्ट ऽस्थान ॥

॥ दोहा ॥

येक मुक दूसर सकल तीसर विहल जान ।
चौथे काली कालका पंचमकालज्ञज्ञान ॥
षष्टम सप्तम भेदहै तेहि जाने नहि कोय ।
अष्टम कोवह जानिये जोनर ज्ञानी होय ॥

॥ महातम चतुर्दशऽस्थान ॥

चौदह जोऽस्थानहैं अवधपुरी के माहिं ।
ताको फल बहुतैकहो समभोसबामिलिताहि ॥
इतिश्री अजोध्या महातमे उमाशिव सम्वादे भाषा हजारी कृते नाम विंसवो ऽध्याय ॥ २० ॥

॥ इति श्री अयोध्यामाहात्म्य भाषा समाप्तम् ॥

न ॥

पढ़िये ! पढ़िये !! अवश्य पढ़िये !!!

लगनपचीसी =) षटऋतुपदावली ।-) आल्हा सुन्दरकाण्ड =) चाणक्यनीति दर्पण ।=) दुर्गासप्तसती गुटका ।-) शिवपुराण भाषा विलायती जिल्द २) शिवपुराण दोहा चौंपाई विलायती जिल्द १) महाभारत १८ हों पर्व विलायतीजिल्द १॥) लिङ्गपुराण भाषा विलायतीजिल्द १।) भविष्य पुराण भाषा विलायती जिल्द १॥) विनयपत्रीका भाषा विलायतीजिल्द १) रामचन्द्रिका विलायतीजिल्द १) गीतावली गोसाईजीकी सटीक विलायती जिल्द १) आल्हा रामायणबड़ा विलायतीजिल्द २॥) आल्हखण्ड २२ लड़ाई विलायती जिल्द १॥) रामायण विलायती जिल्द १॥) हनुमानज्योतिष भाषा भरनभण्डार =॥) ज्योतिष सोपान अर्थात महाहोड़ाचक्र=) राशि माला =) नक्षत्र माला ।) योग माला =) सच्चे २ करामातों का भण्डार करामातीपिटारा ।=) शिवतंत्र थोड़ा दाम चोखा काम =)

इनके अलावा और भी सर्व प्रकारकी पुस्तकें हमारे यहां से उचित मूल्य पर मिलसक्ती है ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना

सेठ छोटेलाल लक्ष्मीचन्द

बुकसेलर मुकाम मौंदा पोस्ट काकोरी सूबे अवध